

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने देशभक्ति के जोश के साथ 77वां गणतंत्र दिवस मनाया; कुलपति और रजिस्ट्रार, जेएमआई ने सामाजिक न्याय, समानता और भाईचारे के मूल्यों पर दिया ज़ोर

नई दिल्ली, 26 जनवरी, 2026

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) ने आज भारत का 77वां गणतंत्र दिवस बहुत उत्साह और देशभक्ति के जोश के साथ मनाया, जो 'वंदे मातरम' की 150वीं वर्षगांठ की थीम पर आधारित था, जोकि राष्ट्रगीत को समर्पित था। प्रो. मज़हर आसिफ़, कुलपति, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, और प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी, रजिस्ट्रार, जेएमआई ने डॉ. एम.ए. अंसारी ऑडिटोरियम के सामने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके बाद राष्ट्रगान गाया गया, जो 1950 में संविधान को अपनाने का प्रतीक था।

औपचारिक कार्यक्रम में अनुवाद के साथ तिलावत-ए-कुरान और जामिया तराना का भावपूर्ण गायन शामिल था। एनसीसी कैडेट्स और यूनिवर्सिटी सुरक्षा कर्मचारियों द्वारा एक भव्य और प्रभावशाली परेड ने इस अवसर की देशभक्ति की भावना और गंभीरता को और बढ़ा दिया।

प्रो. नीलोफर अफ़ज़ल, डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर, जेएमआई, ने स्वागत भाषण दिया और इस दिन के महत्व और भारत के संविधान में निहित मूल्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी की वार्षिक पत्रिका भी औपचारिक रूप से जारी की गई।

अपने संबोधन में, प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी, रजिस्ट्रार, जेएमआई ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर विचार किया, जिसमें 'पूर्ण स्वराज' प्राप्त करने के प्रस्ताव को अपनाने और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की जकड़ से राष्ट्र की मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ने पर प्रकाश डाला। प्रो. रिज़वी ने डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की अध्यक्षता में संविधान के मसौदे को तैयार करने के पीछे किए गए उल्लेखनीय प्रयास पर भी ज़ोर दिया, यह बताते हुए कि संविधान सभा के सदस्यों ने भारत के लोगों को दुनिया के सबसे बेहतरीन संविधानों में से एक देने के लिए दो साल, ग्यारह महीने और सत्रह दिन तक हर अनुच्छेद पर विचार-विमर्श किया। प्रोफेसर महताब आलम रिज़वी ने कहा, "संविधान सभी नागरिकों को उनकी जाति, पंथ, धर्म, क्षेत्र, भाषा, जातीयता या लिंग की परवाह किए बिना समान अधिकारों की गारंटी देता है, और यह पुष्टि करता है कि भारत में 'सत्ता लोगों के पास है'। संविधान लोकतंत्र को कैसे मजबूत करता है, यह समझाते हुए, उन्होंने इसमें निहित सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के मूल मूल्यों के बारे में विस्तार से बताया।

1920 के दशक में ब्रिटिश शासन के साथ समझौता करने से जेएमआई के संस्थापकों के इनकार पर जोर देते हुए, उन्होंने जेएमआई को एक ऐसे संस्थान के शानदार उदाहरण के रूप में वर्णित किया जो भारत के समावेशिता, विविधता, एकता, सांस्कृतिक बहुलता, सामाजिक न्याय और देशभक्ति के मूलभूत मूल्यों का प्रतीक है और संविधान में निहित मूल्यों को अक्षरशः और भावना से बनाए रखता है। उसी भावना और

संकल्प के अनुरूप, प्रोफेसर रिज़वी ने कहा कि जेएमआई राष्ट्र के साथ खड़ा है और छात्रों को तिरंगे के महत्व और राष्ट्रवाद की अवधारणा के बारे में याद दिलाता है।

इसके बाद कुलपति प्रोफेसर मज़हर आसिफ़ का अध्यक्षीय संबोधन हुआ, जिन्होंने भारतीय संविधान के निर्माताओं को उनकी दूरदर्शिता और लोकतांत्रिक आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने एकता, लोकतंत्र, समावेशिता और सामाजिक न्याय के संवैधानिक मूल्यों पर जोर दिया, और दोहराया कि जामिया मिलिया इस्लामिया "सभी के लिए और सभी के द्वारा" खड़ा है, जो इसके शिक्षण, गैर-शिक्षण और प्रशासनिक कर्मचारियों के सामूहिक योगदान को मान्यता देता है। प्रोफेसर आसिफ़ ने गणतंत्र दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला, जो संविधान को अपनाने का दिन है, और इस बात पर जोर दिया कि छात्रों, शिक्षकों और सभी साथी भारतीयों को संविधान निर्माताओं की कड़ी मेहनत के लिए कृतज्ञता और सम्मान के साथ इस दिन को याद रखना चाहिए। उन्होंने छात्रों को याद दिलाया कि समानता और स्वतंत्रता से लेकर शोषण के खिलाफ सुरक्षा तक सभी मौलिक अधिकार संविधान से उत्पन्न होते हैं और सामूहिक रूप से हमें जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं। प्रोफेसर आसिफ़ ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर, के. एम. मुंशी, मुहम्मद सादुल्ला, बी. एन. राव, एस. एम. मुखर्जी और अन्य प्रतिष्ठित हस्तियों, न्यायविदों और स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद किया, जिन्होंने भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए अथक प्रयास किया। प्रोफेसर आसिफ़ ने सभा को यह भी याद दिलाया कि "जब बहुसंस्कृतिवाद, एकता, विविधता, संस्कार और संस्कृति के मूल्यों की बात आती है तो हमारे देश का कोई मुकाबला नहीं है।" भारत को ज्ञान, संस्कृति और मानवता का पवित्र भंडार बताते हुए, प्रो. आसिफ़ ने जेएमआई के फैकल्टी, स्टाफ और छात्रों से संविधान में बताए गए बुनियादी सिद्धांतों, जैसे न्याय, स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा और संप्रभुता का सक्रिय रूप से पालन करने का आग्रह किया, जो जेएमआई द्वारा 1920 में अपनी स्थापना के बाद से अपनाए गए मूल मूल्यों और राष्ट्रवादी भावना में भी झलकते हैं।

जामिया स्कूलों के छात्रों और यूनिवर्सिटी हॉस्टल में रहने वाले छात्रों द्वारा पेश किए गए रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जश्न और भी शानदार हो गया, जिसमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और मिली-जुली विरासत को दिखाया गया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ। जामिया मिल्लिया इस्लामिया में गणतंत्र दिवस समारोह ने संवैधानिक मूल्यों के प्रति यूनिवर्सिटी की प्रतिबद्धता और राष्ट्र की सेवा के प्रति उसके अटूट समर्पण की पुष्टि की।

प्रोफेसर साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी